International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 01 Ser. II || January 2019 || PP 91-92

नैतिक मूल्यो का ह्रास

डॉ. भूपेन्द्र कौर
सहायक प्राध्यापिका
शिक्षा विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

सार–
प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे सफलता का आधार शिक्षा मे निहित है। आजकल शिक्षा को पूर्ण व्यावसायिक बनाने पर बल दिया जा रहा है। शिक्षा द्वारा विकल्पो मे से उत्तम को चुनने की कुशलता विकसित होनी चाहिए। उत्तम विकल्प के चयन की प्रक्रिया वास्तव मे मूल्य प्रक्रिया है। आज समाज मे मूल्यो का ह्रास व्यक्ति, समाज, और राष्ट्र के लिए एक गम्भीर चुनौती है। यदि व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है, समाज मे प्रेम, सत्य, सहयोग, सहानूभूति, बन्धुत्व का वातावरण पैदा करना है और राष्ट्र की रक्षा करनी है उसकी एकता अखण्डता बनाये रखनी है व आर्थिक समृद्धि लानी है तो मल्यो के महत्व को समझ कर अपने जीवन मे उतारना होगा, लेकिन जब हम मूल्यो के तेजी से हो रहे ह्रास पर विचार करते है तो हमारा सर शर्म से झुक जाता है। आज मानव मूल्य नकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख हो रहे है उनमे दिन प्रतिदिन गिरावट आ रही है। वर्तमान समय मे मानवीय मूल्यो के प्रति आस्थाओ के टूटने बिखरने के कारण सामाजिक एवं नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। मूल्यो की वर्तमान गम्भीर समस्या को हल करने के लिए आवश्यक है कि शुरू से ही मानवजाति को इस संकट से अवगत कराया जाये ताकि आनेवाले समय मे इस समस्या का समाधान हो सके।

मुख्य शब्द (Key words): *अखण्डता, उन्मुख, अवलोकनीय, ध्वनित*

प्रस्तावना–
राजनैतिक क्षेत्र मे नैतिक भावना का अवमूल्यन
सामाजिक जीवन मे नैतिकता का ह्रास
धार्मिक क्षेत्र मे नैतिकता की कमी
समस्या का समाधन
उपंसहार

प्रस्तावना–मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे दूसरों के साथ नैतिकता से रहना चाहिए। आज समाज मे नैतिक मूल्यो का प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है आज के समाज मे नैतिकता नाम की चीज का कही कोई निशान नही नजर आता है। नैतिक मूल्यो में सद्गुणों, तमीज का प्रमुख स्थान होता है। आज के वृद्ध यह कहते नही थकते कि आज का नौजवान नैतिकता से कोसो दूर है। समाज मे प्रेम, त्याग, सदभावना तथा परोपकार की भावना का लोप होता जा रहा है। स्वार्थ भावना, अत्याचार अन्याय तथा द्वेष का बोलबाला है। आज नैतिकता का ह्रास भारतीय समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे अवलोकनीय है। आज समाज नैतिकता की भावना से विमुख होकर निरन्तर पतन की खाई मे गिरता चला जा रहा है। चारो ओर अन्धकार छाया हुआ है। कही भी प्रकाश की किरण दिखाई नही देती ।

राजनैतिक क्षेत्र मे नैतिक भावना का अवमूल्यन –

आज का राजनैतिक क्षेत्र भी नैतिकता की क्रिया कर रहा है। महात्मा गॉधी धर्म राजनीति को अलग करके नही देखते थे। उनकी यह दृढ मान्यता थी कि धर्म के अभाव मे राजनीति ढकोसला मात्र बन कर रह जाती है। राज्य का संचार भी किन्ही नीतियो की धुरी पर ही होता है। यदि इन्हे नीतियो से अलग हटा दिया जाये तो राज्य का संचालन भली प्रकार असम्भव है। यहॉ धोखा, स्वार्थ–साधन तथा छल को सदैव हेय की दृष्टि से देखा जाता है। यद्यपि देवताओ के साथ राक्षसो का भी बाहुल्य रहा है। चाहे देवताओ को राक्षसो ने अगाध पीडा दी है। लेकिन अन्त मे देवताओ ने राक्षसो पर विजय प्राप्त की है तभी तो भारत की धरती पर ''सत्यमेव जयते'' के स्वर ध्वनित होते रहे है। यहा अन्याय, अत्याचार तथा हिसा पर सदैव सत्य तथा अहिसा की विजय रही है।

विभिन्न राजनैतिक दल चुनाव के समय तमाम सिद्धान्तो का राग अलापते है। लेकिन चुनाव मे विजय प्राप्त करने के पश्चात् वे समस्त वे सिद्धान्त खोखले सिद्ध होते है। जब विरोधी राजनैतिक दल किन्ही सिद्धान्तो का विरोध करते है तो वे एक स्वर मे उसके विरूद्ध खडे हो जाते है। इसके अतिरिक्त जब उनके दल के लोग सिद्धातो की बखिया उखेडते है तो वे इसको उचित ठहराते है। आज भारत का राजनैतिक जीवन नैतिकता का परित्याग करता हुआ चला जा रहा है। आज का भारतीय नागरिक वोट धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय के नाम पर मॉगता है। चुनाव मे प्रत्याशी भी किसी जाति विशेष के खडे किए जाते है ताकि जाति के आधार पर मत प्राप्त करके जाति विशेष का प्रत्याशी विजय प्राप्त कर सके। आज हमारे राष्ट्र के कर्णधार आदर्शा की तो दुहाई देते है। लेकिन उनके व्यक्गित जीवन मे आदर्शो का नामोनिशान तक देखा नही जाता। आज भारत के नेता साम, दाम, दण्ड तथा भेद से सत्ता प्राप्त करने मे तल्लीन है। सत्ता प्राप्त करने के समक्ष सब सिद्धान्त तथा आदर्श ताक पर रख दिये जाते है। जब समाज के कर्णधार की ही यह दशा है तो अन्य लोगो के विषय मे क्या कहा जा सकता है। बन्धुत्व, सेवा, बलिदान तथा परोपकार की भावना जो आजादी से पूर्व दिखाई देती थी आज उसका लोप होता जा रहा है। नैतिकता की भावना प्रजातन्त्र पुष्ट तथा गतिमान बनती है। नैतिकता के अभाव मे हमारा प्रजातन्त्र अजायबधर की वस्तु मात्र बन कर रह जायेगा। नैतिकता को त्याग कर प्रगति के सपने सजोना दिवास्वप्न मात्र बनकर रह जायेगा। आज धर्म प्रधान भारत को न जाने कौन सा धुन लग गया है जिसके कारण नैतिकता की बात करना भी आज बुरा माना जा रहा है। नैतिकता तथा धर्म मे धारण करने की क्षमता होती है, उसके बिना हमारा जीवन दर्शन ही अधूरा है।

सामाजिक जीवन मे नैतिकता का ह्रास

प्राचीन काल मे हमारे देश भारत मे अपने देश के निमित्त ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए विश्व के लिए विश्व–बन्धुत्व की भावना का पारावार लहरा रहा था। देश के समस्त नागरिक प्रेम के सूत्र मे बॅधकर बडे प्रेम से जीवन यापन करते थे। यहा के प्रेम तथा भाई चारे को समस्त संसार एक आदर्श के रूप मे देखता था। यहा के नैतिक मूल्यो को देख कर विदेशी दॉतो तले उगली दबाते थे। भारत के लोग अपनी बात के धनी होते थे। सभी सम्प्रदाय, जाति तथा धर्म के लोग परस्पर मिलकर रहते थे। आजादी से पूर्व सभी धर्म, जाति तथा सम्प्रदायके लोगो ने भेदभाव से परे हटकर अग्रेजो से सघर्ष किया था। आज बन्धुत्व, प्रेम तथा सदभावना का स्थान धृणा ने ले लिया है। पहले हमारे देश के जन–मानस मे यह भाव विद्यमान था कि दान तथा त्याग का प्रभु उत्तम फल देता है तथा भविष्य भी उज्जवल बनता है। रावण, कंस, हिटलर तथा मुसोलियन अत्याचार के बल पर कितना सफल हो सके ये बात सबके समक्ष प्रत्यक्ष है। थोडे समय के लिए इन्होने अत्याचार करके भले ही सन्तोष कर लिया हो लेकिन अन्त मे उनका जीवन नरकीय बना।

धार्मिक क्षेत्र मे नैतिकता की कमी–

धर्म तथा नैतिकता एक सिक्के के दो पहलू है। यदि धर्म नैतिकता का आश्रय ग्रहण नही करता है तो उसे हम यथार्थ धर्म की संज्ञा से विभूषित नही कर सकते है। सामाजिक जीवन को सुखमय बनाने के लिए हमारे देश मे सदैव से धर्म का आश्रय ग्रहण किया जा रहा है। भारत वर्ष ने धर्म को सदा से अपने जीवन मे प्रमुख स्थान दिया है। हमारे देश का हिन्दू धर्म सर्वजन हिताय की भावना से ओतप्रोत रहा है। यहॉ सबके सुखी जीवन तथा कल्याण भावना का नारा बुलन्द रहा है। आज धर्म के नाम पर जो संधर्ष, कलह तथा मन मुटाप के बीजारोपन किए जा रहे है वह बहुत ही निन्दनीय तथा अशोभनीय है। आज हिन्दू, मुसलमान, सिख तथा ईसाई धर्म के लोग धर्म के नाम पर संधर्ष कर रहे है।

विगत सालो मे पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा देश के अन्य भागो मे एक धर्म तथा सम्प्रदाय के लोगो पे जो अत्याचार किए उनके धाव आज भी हरे है।

समस्या का निराकरण– नैतिकता के पल्लवन के लिए साम्प्रदायिकता तथा धर्म के नाम पर चलने वाली संस्थाओं पर प्रतिबन्ध लगाना होगा। इसके लिए जन चेतना का विकास करना भी परम आवश्यक है। आर्थिक असमानता को भी समाप्त करना होगा। प्रेम, भाईचारा तथा सदभावना को फेलाने के लिए स्वयं सेवी संस्थाओ को निस्वार्थ भाव से काम करना चाहिए। नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा कानूनो से नही अपितु जनसहमति से ही प्रतिष्ठित की जा सकती है। धर्म के स्वार्थ रूप की शिक्षा भी नागरिको को देनी परमावश्यक है। शिक्षा को भी नैतिक मूल्यो से ओत प्रोत करना होगा ताकि भारतीय नौजवान इस शिक्षा–दीक्षा मे शिक्षा ग्रहन करके आदर्श नागरिक बन सके। विद्यालय मूल्य के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते है। बालको मे मूल्यो प्रति जागृति पैदा करने के लिए आवश्यक है कि विद्यालयी वातावरण लोकतान्त्रिक, स्वच्छ, सौन्दर्यपूर्ण, अनुशासन प्रिय और सृजनात्मक होना चाहिए। अनैतिक प्रवत्तियों का भी मिल जुलकर सामना करना होगा।

उपसंहार– आज के भारतीय जीवन मे जो नैतिक मूल्यो का ह्रास हो रहा है वह बहुत ही शोचनीय एवं दुखद धटना है। नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा के बिना हम कदापि प्रगति की मंजिल पर अग्रसर नही हो सकते। संतोष तथा शांति सबसे बडा धन होता है। इनकी प्राप्ति नैतिकता की भावना के बिना असम्भव है। अत; हमे राष्ट् तथा समाज की उन्नति के लिए नैतिक मूल्यो को सर्वोपरि स्थान देना होगा। तभी हम प्रगति की मंजिल पर अबोध गति से बढ सकेगे। समाज मे ऐसे समाजसेवी संगठनो का निर्माण करना होगा जो निस्वार्थ भाव से लोगो की सेवा करे।

संदर्भग्रंथ सूची–

जैन, भोला, पायल, मूल्य पर्यावरण तथा मानवाधिकारों की शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 2012/13
निबन्ध मंजूषा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 2013/14
पाण्डेय, रामशकल, मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण,I अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 2012/13
पाण्डेय, रामशकल, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 2012
मिश्रा, करूणाशंकर मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 2012/13
रूहेला, एस., पी., विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 2012